रात्रिक्लास 14-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

एक है स्थापना की सिरोमणी। दूसरी सिरोमणी होती है जब कुछ खोला जाता है। यहां सिर्फ स्थापना किया जाता है। औपानिंग सिरोमणि होगी नहीं। तुम समझ सकते हो तुम संगम युग पर हमने स्थापना की सिरोमणि की है वह चल रही हैं। जब स्थापना हो जावेगा तो फिर विनाश भी हो जावेगा। स्थापना विनाश और पालना। पालना तो होनी है नई दुनिया में। अन्डरस्टुडहै तो स्थापना करेंगे वह पालना करेंगे। ब्रह्मा स्थापना करते हैं पालना देवता करते हैं। फिर विनाश करते हैं असुर अपना। सांयस माया भी तुमको मदद देती है। नेचरल कैलामिटज भी तुमको मदद करती है। उनको भी माया ही कहेंगे। सांयस से विनाश होता है। तो माया अपना विनाश करती है। देवता ए अपना विनाश करते हैं अर्थात देवता से बदल असुर बन जाते हैं। खेल भी इनका ही है। तुम ही पुजारी असुर थे फिर देवतापूज्य बने। फिर अपना ही विनाश किया कि असुर बने। अभी तुम विनाश किसका नहीं करते हो। विनाश करना पाप है। माया भी ऐसी है। माया पाप में ले जाती है। बाप पुण्य में ले जाते हैं। आत्मा पुण्यात्मा बन जाती है तो यह फिर पुराना शरीर छोड़ देते हैं। फिर नया शरीर मिलता है। यह भी ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में है। तुम बच्चों को ही पार्ट मिला है बुद्धि में धारण करने का। और कोई की बुद्धि में यह बातें नहीं हैं। बाप के सिवाय और कोई बातें यह समझा नहीं सकते हैं। वह तो रांग हो जाती है। कल्प2 तुम ही राईटस सुनाते हो। स्थापना का कार्य बाप ही आकर करते हैं। अभी दुनिया तमोप्रधान है तो तुम सतोप्रधान बनाते हो। बाप यही शिक्षा देते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह भी तुम जानते हो हम देवी देवता धर्म स्थापन कर रहे हैं। तुम समझते हो हम देवी देवताएं फिर से बनते हैं। यह है ही प्रवृति मार्ग। सन्यासियों का है निवृति मार्ग। बाकी सभी धर्म प्रवृति मार्ग वाले हैं। बड़ी भारी भूल एक ही है जिसको क्लीयर करना है अच्छी तरह। मुख्य शास्त्र में ही भूल है। तुम बच्चे ड्रामा पर अडोल रहते हो समझते हो प्रजा बन रही है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जब स्थिर यम तुम हो जावेंगे फिर विनाश होगा। अखबारों में जब तक न पड़ा है तब तक समझा जाता है विनाश में देरी है। बाप का संदेश तो सब को मिलना है ना। प्रजा कोई थोड़ी बनती है। कोई भी शास्त्र में यह बातें हैं नहीं। सिर्फ यह अक्षर ठीक है भगवानुवाच देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। बाप को याद करते हो तो भी तीनों रूपों में याद करना है। बाप टीचर भी है गुरु भी है। तुम बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार निश्चय होता है। अभी कर्मातीत अवस्था को नहीं पहुंचे हैं। स्कूल की पढ़ा चल रही है। नई दुनिया को अमरपुरी कहा जाता है। अभी तुम जान जाते हो अमरपुरी किसको कहा जाता है।

तुम बड़ी रायल टीचर के रायल स्टुडन्ट हो। लक्षण भी रायल चाहिए। पढ़ाई से ही लक्षण आते हैं। कोई भी खिट-पिट न होनी चाहिए। खिट-पिट तमोगुण की निशानी है। खिट-पिट भटके का पानी सुखा देती है। घाटा पड़ जाता है तो जैसे कि भटके का पानी सुख जाता है। किसको भी बैठ समझाना भेजा जाता है। प्रा० बरसा पाते हैं। ब्राह्मण है प्रजापिता ब्रह्मा के मुखवंशावली। यह ब्राह्मण, चोटी है। तुम जानते हो हमारी आत्मा बोलती है इस मुख द्वारा। आत्मा शरीर द्वारा सुनती है। यहां तुम जिसमानी पढ़ाई नहीं पढ़ रहे हो। शिव बाबा रूहानी पढ़ाई पढ़ाते हैं इस शरीर द्वारा। तो तुम बच्चों को पक्का निश्चय हो जाता है। अपने को आत्मा समझना तुम घड़ी2 भूल जाते हो। फील भी करते हो हम तीनों बाप, टीचर गुरु को भूल जाते हैं। इतनी सहज बात में भी माया विघ्न डालती है। एक ही बाप है। बच्चों को पढ़ाते हैं, याद की यात्रा सिखलाते हैं। तो बुद्धि में विचार सागर मंथन का चक्र चलता रहना चाहिए। जब यहां बच्चे आते हैं तो अच्छी रीत धारण कर और पक्का हो कर जाना चाहिए।

अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।